RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 45, अंक : 26 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 29 सितम्बर, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 26, 26–29 सितम्बर 2019 तदनुसार 13 अश्विन, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तेरे आकर्षक रूप को यहीं देखा है

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिष आ पदे गोः।
यदा ते मर्तो अनु भोगमानळादिद् ग्रसिष्ठ ओषधीरजीगः।।

–ऋ० १।१६३।७

शब्दार्थ–गोः = पृथिवी के, इन्द्रियों के **पदे** = ठिकाने में, **इषः** = अन्नों के= विषयों के सदृश **अत्र** = इसी शरीर में, इसी संसार में **ते** = तेरे **जिगीषमाणम्** = जयशील, आकर्षक **उत्तमम्** = सर्वश्रेष्ठ **रूपम्** = स्वरूप को **आ+अपश्यम्** = सब ओर मैंने देखा है। **मर्तः** = मनुष्य **यदा** = जब **ते+अनु** = तेरी अनुकूलता से **भोगम्** = भोग को **आनट्** = प्राप्त करता है **आत्** = तब **इत्** = ही **ग्रसिष्ठः** = अतिशय ग्रसनशील होकर **ओषधीः** = ओषधियों को, दोषनाशक पदार्थों को **अजीगः** = निगलता है।

व्याख्या–समाधि की पूर्ण परिपक्व दशा में योगी को जो अनुभव होता है, उसका यह संक्षिप्त, किन्तु वास्तविक निरूपण है। योगी भगवान् के भर्गः स्वरूप के दर्शन कर चुका है। उसके कारण उसके सब पापमल धुल चुके हैं। भगवान् का मनोहारी स्वरूप अनुभव करके सहसा उसके मुख से निकलता है–'**अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यम्**' = यहीं मैंने तेरे सर्वश्रेष्ठ रूप के दर्शन किये हैं। इसी संसार में और इसी मानव शरीर में ही भगवान् के दर्शन होते हैं–'**यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि**' = जो तेरा कल्याणतम–सबसे अधिक कल्याणकारी स्वरूप है, उसे मैं देखता हूँ। यह सुनी–सुनाई या पढ़ी–पढ़ाई बात नहीं। ऋषि अपना अनुभव बताकर वेद की पुष्टि कर रहे हैं। उसके विषय में पुनः कहते हैं–'**जिगीषमाणमिष आ पदे गोः**' = जैसे विषय इन्द्रियों को खींचते हैं, वैसे ही तेरा यह स्वरूप जिगीषमाण=विजयशील, आकर्षक है।

तात्पर्य यह कि योगी जब परमात्मस्वरूप के दर्शन करता है तो उसे यह अनुभव होता है कि यह तो सबसे अधिक सुन्दर है। सभी सौन्दर्यों को उसने जीत रखा है, तभी तो इसे '**सत्यं शिवं सुन्दरम्**' कहते हैं। सचमुच भगवान् का स्वरूप सुन्दर एवं कल्याणकारी है और कि यह उसे भी जीतने के कार्य में लगा है। सच्ची विजय भगाने में नहीं, अपनाने में है। भगवान् भक्त को भगाता नहीं, अपनाता है। लोहे को चुम्बक के तनिक समीप लाओ, वह उसे खींच लेता है। इसी प्रकार भक्त भगवान् के ज्यों ही समीप जाने का यत्न करता है वह उसे खींच लेता है। जैसे इन्द्रियाँ विषयों को अपनी ओर खींचती हैं, ऐसे भगवान् भक्त को अपनी ओर आकर्षित करता है।

मनुष्य कर्म भी करता है, भोग भी भोगता है। पापकर्मों का फल भोगकर भी बहुधा इसका आत्मा मैला रह जाता है। इसका कारण है–भोग भोगते हुए यह भोगविधाता के प्रतिकूल था। भगवान् कर्मफल देकर इसके आत्मा को शुद्ध कर रहे थे और यह नास्तिकता–रूपी गन्दगी उसमें डालकर उसे मलिन कर रहा था, अतः इसके दोष बने रहे, किन्तु ज्यों ही–'**यदा ते मर्तो अनु भोगमानट, आदिद् ग्रसिष्ठ ओषधीरजीगः**' = भगवान् की अनुकूलता से मनुष्य भोग प्राप्त करता है, ज्यों ही वह वास्तविक भोक्ता बनता है और सब ओषधियाँ–दोषनिवारक पदार्थों को निगल जाता है, तब संसार के सब पदार्थ इसके लिए ओषधि=दोषनाशक बन जाते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः।।

–पू० ३.१.५.२

भावार्थ–हे प्रभो! सब दिशाओं में सन्तजनों के रक्षक आप परमेश्वर को जैसे शत्रुओं से घेरे जाने पर बल प्राप्ति के लिए वीर पुरुष पुकारते हैं, ऐसे ही हम आपके सेवक भक्तजन भी काम क्रोधादि शत्रुओं से घेरे जाने पर, उनको जीतने के लिए आपसे ही बल माँगते हैं। दयामय! जो आपकी शरण आता है खाली नहीं जाता। हम भी आपकी शरण आये हैं हम अपने भक्तों को आपकी आज्ञा रूप वेदों में दृढ़ विश्वासी और जगत् का उपकारक बनाओ, हम नास्तिक और स्वार्थी कभी न बनें, ऐसी कृपा करो।

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तं न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि।।

–पू० ३.२.४.२

भावार्थ–हे सर्वशक्तिमन् प्रभो! जहाँ–जहाँ से हमें भय प्राप्त होने लगे, वहाँ–वहाँ से हमें निर्भय कीजिये। हमें निर्भय करने को आप महासमर्थ हैं इसलिए आप से ही हमारी प्रार्थना है कि हमारे बाहर के शत्रु और विशेष करके हमारे भीतर के काम क्रोधादि सर्व शत्रुओं का नाश कीजिये जिस से हम निर्विघ्न होकर आपके ध्यानयोग में प्रवृत्त हुए मुक्ति को प्राप्त होवें।

कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते।।

–पू० ४.१.१.८

भावार्थ–हे प्रभो! प्राणिमात्र के कर्मों का फल देने वाले आप हैं, कभी किसी के कर्म को निष्फल नहीं करते न किसी निरपराध को दण्ड ही देते हैं। किन्तु इस जन्म और पुनर्जन्म में सब प्राणिवर्ग आपकी व्यवस्था से कर्मानुसारी फल को भोगने वाला बनता है।

वेदों में नारी

ले.-डॉ. कृष्ण लाल विश्वनीड, ई-937, सरस्वती विहार, दिल्ली

किसी भी युग अथवा देश की सामाजिक व्यवस्था एवं तत्सम्बन्धी दृष्टिकोण का वास्तविक मूल्यांकन नारियों की स्थिति एवं उनके विषय में प्रचलित धारणाओं के अध्ययन के बिना अपूर्ण है। वेदों में नारी का क्या स्वरूप है? उसकी स्थिति दयनीय थी अथवा वह उच्च पद पर प्रतिष्ठित थी? इसके विविध रूपों यथा-कन्या, वधू, पत्नी, विधवा इत्यादि के विषय में क्या कहा गया है? इन सब प्रश्नों का समाधान वेदकालीन नारी विषयक मान्यताओं को स्पष्ट कर देता है।

विवाह के पश्चात् स्त्री वधू-रूप में पतिगृह में पदार्पण करती है। ऋग्वेद के एक मंत्र में वधू को परिवार में सबसे ऊँचा स्थान दिया गया है- ''हे वधू! तुम अपने सास-ससुर, ननद और देवरों के प्रति शासक, सम्राज्ञी हो जाओ।''

इसी प्रकार अथर्ववेद में कहा गया है कि जिस प्रकार बलिष्ठ समुद्र नदियों का सम्राट हो जाता है, उसी प्रकार पति के घर पहुँचकर हे वधू, तुम भी सम्राज्ञी हो जाओ। पति उसकी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखता है वह उसके प्रति उत्तरदायित्व समझता हुआ कहता है कि तुम मेरे साथ रहती हुई सन्तान और धन किसी भी दृष्टि से कष्ट का अनुभव नहीं करोगी।

इस प्रसंग में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि सम्राज्ञी के प्रतिष्ठित पद के साथ नववधू पर सम्राज्ञी के कर्त्तव्यों का भार स्वाभाविक रूप से आ पड़ता है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह घर-परिवार की सुख-सुविधा, व्यवस्था, सदाचार, पोषण आदि का पूरा ध्यान रखेगी।

पत्नी रूप में नारी का सम्माननीय स्थान उल्लिखित है। घर का केन्द्र-बिन्दु पत्नी ही है, वही वैवाहिक जीवन का मूल है-

''जायेदस्तं मघवन् सेदु योनिः''

ऋग्वेद में पत्नी को घर का आभूषण कहा गया है। सोम नामक औषध के पान से प्रसन्न इन्द्र से प्रार्थना की गयी है कि घर जाओ, तुम्हारे घर में कल्याणी जाया है और घर में आनन्द है। परिवार के लिए पत्नी कल्याणकारिणी और मंगलस्वरूपा होती है। इसीलिए उसे सम्बोधित किया गया है कि वह अपने पति के लिए क्षेमकारिणी हो। उसे अदुर्मंगली, अघोरचक्षु एवं अपतिघ्नी तथा शिवा कहा गया है। इतना ही नहीं वेदों के व्याख्यास्वरूप ब्राह्मणग्रन्थों में भी जहाँ यज्ञ के माध्यम से स्वर्ग पर आरोहण की भावना की गई है, वहाँ भी पत्नी का होना अनिवार्य है। पत्नी के बिना गृहस्थ उस लाभ को प्राप्त नहीं कर सकता है क्योंकि पत्नी तो अर्धांग ही है। इसके बिना वह पूर्ण नहीं है-

''स रोक्ष्यञ्जायामामन्त्रयते जाये एहि स्वो रोहावेति। रोहावेत्याह जाया।

तस्माज्जायायामामन्त्रयते। अर्धो ह वैष आत्मनो यज्जाया।''

पत्नी को मित्र माना गया है-

''सखा ह जाया''

स्वयं विवाह-संस्कार में सप्तपदी के अवसर पर जिन मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है, उनके अन्तिम शब्दों में वधू को सखा के रूप में सम्बोधित किया गया है।

''सखे सप्तपदी भव''

(पारस्करगृह्यसूत्र-1/8/1)

पति-पत्नी का सम्बन्ध वैदिक दृष्टि में मित्र जैसा सम्बन्ध है और वह भी चकवा चकवी के समान घनिष्ठ। एक मन्त्र में आशीर्वाद-रूप में परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि वह पति-पत्नी को समस्त आयु पर्यन्त चकवा-चकवी की भांति रहने को प्रेरित करें।

ऋग्वेद में विधवा का भी कई बार उल्लेख हुआ हैं। परन्तु उल्लेखों से ऋग्वेद-काल में विधवा के जीवन, अधिकारों और कर्त्तव्यों पर प्रकाश नहीं पड़ता है। यास्क ने विधवा को पोषकरहित कहा है क्योंकि उन्होंने विधवा शब्द की 'विधातृका भवति' (वि+√ धा-विगतो धाता यस्याः सा, पोषकरहित) इस प्रकार व्याख्या की है। यास्क ने एक व्याख्या और दी है, जिसके अनुसार धव मनुष्य अर्थात् पति है, उसके वियुक्त विधवा है। अश्विनौ देवों को उन पतिविहीन स्त्रियों का रक्षक कहा गया है। एक अन्य ऋचा भी विधवा के अस्तित्व को प्रतिपादित करती है जिसमें 'इन्द्र की माता को किसने विधवा बनाया?' यह प्रश्न किया गया है। वस्तुतः यहाँ जीवात्मा द्वारा परमात्मा की शक्ति को न पहचानना ही आलंकारिक रूप में उसे विधवा बनाना कहा गया है। विधवा नारी को दूसरा पति प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है। अथर्ववेद में विधवा स्त्री के दूसरे पति का स्पष्ट रूप से उल्लेख है।

ऋग्वेद में पुत्री के लिए दो नाम सर्वाधिक मिलते हैं-दुहिता और कन्या। यास्क कन्या शब्द की निरुक्ति कन्या कमनीया भवति करते हैं। कन्या शब्द कमु कान्तौ से बनता है अर्थात् यह कमनीया होती है, प्रिय होती है। दुहिता शब्द का निर्वचन तीन प्रकार से किया है-''दुहिता, दुर्हिता दूरे हिता दोग्धेर्वा।''

मैक्डॉनल और कीथ ने ''वैदिक इन्डेक्स'' में दुहितर् की व्युत्पत्ति के विषय में अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा है कि यह शब्द दुह् (दोहना) 'धातु से निष्पन्न प्रतीत होता है और इसका आशय आदिम अवस्था के परिवार की 'दूध दोहने वाली' अथवा 'दूध पिलाने वाली' न होकर 'बच्चे का पालन करने वाली है।' माता-पिता अपनी पुत्रियों का लालन-पालन बड़े प्यार से करते थे। दो बहिनों के माता पिता की गोद में एक साथ बैठने का स्पष्ट उल्लेख ऋग्वेद में है-

''संगच्छमाने युवती समन्ते स्वसारा जामी पित्रोरुपस्थे''

इसमें 'युवती' शब्द से यह संकेत मिलता है कि न केवल कन्यायें माता-पिता को समान रूप से प्रिय थी अपितु वे युवावस्था तक उनके पास अविवाहित रहकर आनन्दित रहती थी। इसके अतिरिक्त आलंकारिक रूप में धनुष को बहुत सी इषुओं (बाणों) का पिता कहा गया है-बहीना पिता। इससे यह स्पष्ट है कि जैसे पुत्रों के, वैसे ही बहुत सी कन्याओं के पिता भी थे और वे किसी प्रकार भी असंतुष्ट नहीं थे। अथर्ववेद में मोटी-हृष्टपुष्ट कन्या का उल्लेख हुआ है।

ऋग्वेद में प्रमुख रूप से माता के लिए चार शब्दों का प्रयोग हुआ है-माता, जनित्री, अम्बा और नना। यहाँ माता के उदात्त रूप के दर्शन होते हैं। माता अपनी सन्तान को प्यार करती है। वह सन्तान के लिए प्राण तक दे सकती है। ऋग्वेद के एक प्रसंग के अनुसार इन्द्र और वृत्र के मध्य युद्ध हो रहा था। वृत्र की माता ने उसकी रक्षा के लिए उसकी देह को अपनी देह से ढक लिया। अग्निदेव को माता की भांति प्रत्येक का पोषण करने वाला कहा गया है।

वैदिक समाज में एक शिक्षित युवती अपेक्षाकृत अधिक प्रशंसनीय व प्रतिष्ठित थी। शिक्षा एक वैवाहिक आवश्यकता थी, जिसे कन्या अपने पिता के साथ रहकर प्राप्त करती थी। अथर्ववेद के ब्रह्मचारी सूक्त में कन्या के विषय में कहा गया है कि वह ब्रह्मचर्य के द्वारा युवा पति को प्राप्त करती है। इससे यह ज्ञात होता है कि वैदिक काल में कन्यायें भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई गुरुकुलों में वेद का अध्ययन करती थी। ऐतरेय तथा कौषीतकि ब्राह्मणों में ''कुमारी गन्धर्वगृहीता'' का मत अग्निहोत्र के समय के विषय में प्रमाण रूप में उद्धृत किया गया है। इससे एक ओर तो यह सिद्ध होता है कि कुमारावस्था में कन्यायें गन्धर्व विद्या अर्थात् संगीत-नृत्य सीखती थीं और साथ ही इतना शास्त्रीय ज्ञान भी अर्जित करती थी कि उनकी बात प्रमाण मानी जाये। परम्परा के अनुसार ऋग्वेद के अनेक सूक्तों की द्रष्टा स्त्री ऋषि हैं। इनमें से विश्ववारा आत्रेयी (ऋ. 5/28) अपाला आत्रेयी (ऋ. 8/91) और घोषा काक्षीवती (ऋ. 10/39, 40) मुख्य हैं, जिन्होंने पूर्ण सूक्तों का दर्शन किया है। अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा को प्रथम मण्डल के सूक्त 179 की प्रथम तथा द्वितीय ऋचाओं का ऋषि कहा गया है। भावयव्य की पत्नी रोमशा को ऋ. 1/126/7 का ऋषि कहा गया है। यद्यपि ऋग्वेद में किसी स्त्री-पुरोहित का उल्लेख नहीं हुआ है तथापि ऋग्वेदीय साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि स्त्रियाँ भी स्वतंत्र रूप से देवों की स्तुतियां करती थी। और देवों का सोमपान के लिए आह्वान किया

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

श्राद्ध, तर्पण, पिण्ड़दान के विषय में सत्यार्थ प्रकाश का प्रेरणादायक प्रसंग

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में अपने देश में प्रचलित मत-मतान्तरों की समीक्षा करते हुए असत्य मतों का खण्ड़न और सत्य मत का मण्ड़न किया है। आर्यावर्त में प्रचलित सभी मतों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निष्पक्ष होकर चिन्तन किया है। इसी ग्याहरवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रश्नोत्तर के रूप में गरूड़ पुराण तथा अन्य पोप लीलाओं का खण्ड़न किया है। मृतक जीव के नाम पर उनके परिवार को किस प्रकार लूटा जाता है इस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दृष्टान्त के माध्यम से बहुत सुन्दर प्रकाश ड़ाला है। श्राद्ध, तर्पण, गोदानादि, वैतरणी नदी पार कराने के नाम पर ढ़ोगी ब्राह्मणों के द्वारा समाज में बहुत पाखण्ड़ फैलाया हुआ है। आईये महर्षि दयानन्द के शब्दों में ही इस विषय पर विचार करते हैं-

(प्रश्न) क्या गरूड़पुराण भी झूठा है?

(उत्तर) हां असत्य है।

(प्रश्न) फिर मरे हुए जीव की क्या गति होती है?

(उत्तर) जैसे उसके कर्म हैं।

(प्रश्न) जो यमराज राजा, चित्रगुप्त मन्त्री, उस के बड़े भयंकर गण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीरवाले जीव को पकड़ कर ले जाते हैं। पाप, पुण्य के अनुसार नरक, स्वर्ग में डालते हैं। उस के लिए दान, पुण्य, श्राद्ध, तर्पण, गोदानादि, वैतरणी नदी तरने के लिए करते हैं। ये सब बातें झूठ क्योंकर हो सकती हैं।

(उत्तर) ये सब बातें पोपलीला के गपोड़े हैं। जो अन्यत्र के जीव वहां जाते हैं उनका धर्मराज चित्रगुप्त आदि न्याय करते हैं तो वे यमलोक के जीव पाप करें तो दूसरा यमलोक मानना चाहिए कि वहां के न्यायाधीश उन का न्याय करें और पर्वत के समान यमगणों के शरीर हों तो दिखते क्यों नहीं? और मरने वाले जीव को लेने में छोटे द्वार में उन की एक अंगुली भी नहीं जा सकती और सड़क गली में क्यों नहीं रूक जाते। जो कहो कि वे सूक्ष्म देह भी धारण कर लेते हैं तो प्रथम पर्वतवत् शरीर के बड़े-बड़े हाड़ पोप जी बिना अपने घर के कहां धरेंगे?

जब जंगल में आग लगती है तब एकदम पिपीलिकादि जीवों के शरीर छूटते हैं। उनको पकड़ने के लिए असंख्य यम के गण आवें तो वहां अन्धकार हो जाना चाहिए और जब आपस में जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर ठोकर खा जायेंगे तो जैसे पहाड़ के बड़े-बड़े शिखर टूट कर पृथिवी पर गिरते हैं वैसे उनके बड़े-बड़े अवयव गरूड़पुराण के बांचने, सुनने वालों के आंगन में गिर पड़ेंगे तो वे दब मरेंगे वा घर का द्वार अथवा सड़क रूक जाएगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे?

श्राद्ध, तर्पण, पिण्ड़प्रदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुंचता किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोप जी के घर, उदर और हाथ में पहुँचता है। जो वैतरणी के लिए गोदान लेते हैं वह तो पोप जी के घर में अथवा कसाई के घर में पहुंचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती फिर पूंछ को कैसे पकड़ेगा? यहां एक दृष्टान्त इस बात में उपयुक्त है कि-

एक जाट था। उस के घर में एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देने वाली थी। दूध उसका बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी-कभी पोप जी के मुख में भी पड़ता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बूढ़ा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का संकल्प करा लूंगा। कुछ दिनों में दैवयोग से उसके बाप का मरण समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पोप जी ने पुकारा कि यजमान! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट ने 10 रूपया निकाल पिता के हाथ में रख कर बोला पढ़ो संकल्प। पोप जी बोला- वाह-वाह! क्या बाप बार-बार मरता है? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुढ़ी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिए।

(जाट जी) हमारे पास तो एक ही गाय है उस के बिना हमारे लड़के-बालों का निर्वाह न हो सकेगा इसलिए उसको न दूंगा लो 20 रूपये का संकल्प पढ़ देओ और इन रूपयों से दूसरी दुधार गाय ले लेना।

(पोप जी) वाह जी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो? क्या अपने बाप को वैतरणी में डुबा कर दु:ख देना चाहते हो। तुम अच्छे सुपुत्र हुए? तब तो पोप जी की ओर सब कुटुम्बी हो गये क्योंकि उन सब को पहले ही पोप जी ने बहका रखा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सब ने मिलकर हठ से उसी गाय का दान उसी पोप को दिला दिया। उस समय जाट कुछ न बोल सका। उसका पिता मर गया और पोप जी बछड़े सहित गाय और दोहने की बटलोही को अपने घर में बांध बटलोही धर पुन: जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशानभूमि में जाकर दाहकर्म कराया। वहां भी कुछ-कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात दशगात्र सपिण्डी आदि कराने में भी उस को मूंडा महाब्राह्मणों ने भी लूटा और भुक्खड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध मांग-मूंग निर्वाह किया। चौदहवें दिन प्रात:काल पोप जी के घर पहुंचा। देखा तो गाय दुह, बटलोही भर, पोप जी की उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाट जी पहुंचे। उसको देख पोप जी बोला आईये! यजमान बैठिये!

(जाट जी) तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

(पोप जी) अच्छा दूध धर आऊं।

(जाट जी) नहीं-नहीं दूध की बटलोही इधर लाओ। पोप जी बिचारे जा बैठे और बटलोई सामने धर दी।

(जाट जी) तुम बड़े झूठे हो।

(पोप जी) क्या झूठ किया?

(जाट जी) कहो तुमने गाय किसलिए ली थी?

(पोप जी) तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिए।

(जाट जी) अच्छा तो वहां वैतरणी के किनारे गाय क्यों न पहुंचाई? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बांध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे?

(पोप जी) नहीं-नहीं, वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन कर उतार दिया होगा।

(जाट जी) वैतरणी नदी यहाँ से कितनी दूर और किधर की ओर है?

(पोप जी) अनुमान से कोई तीस करोड़ कोश दूर है क्योंकि उन्चास कोटि योजन पृथिवी है और दक्षिण नैर्ऋत दिशा में वैतरणी नदी है।

(जाट जी) इतनी दूर तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो उसका उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई। अमुक के पिता को पार उतार दिया, दिखलाओ?

(पोप जी) हमारे पास गरूड़पुराण के लेख के बिना डाक वा तारवर्की दूसरी कोई नहीं।

(जाट जी) इस गरूड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?

(पोप जी) जैसे सब मानते हैं।

(जाट जी) यह पुस्तक तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हारी जीविका के लिए बनाया है क्योंकि पिता को बिना अपने पुत्रों के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी पत्री वा तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुंचा दूंगा और उनको पार उतार पुन: गाय को घर में ले आ दूध को मैं और मेरे लड़के पिया करेंगे। लाओ! दूध की भरी हुई बटलोही, गाय, बछड़ा लेकर जाट जी अपने घर की ओर चला।

(पोप जी) तुम दान देकर लेते हो तुम्हारा सत्यानाश हो जायेगा।

(जाट जी) चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन जो दूध के बिना जितना दु:ख हम ने पाया है सब कसर निकाल दूंगा। तब पोप जी चुप रहे और जाट जी गाय बछड़ा ले अपने घर पहुंचे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस दृष्टान्त के माध्यम से यही समझाने का प्रयास किया है कि मनुष्य को अपने विवेक का प्रयोग करते हुए ऐसे पाखण्डियों से बचना चाहिए। आज भी श्राद्ध के नाम पर इसी प्रकार का पाखण्ड़ देखने को मिलता है। श्रद्धा से जीते जी जो अपने माता-पिता की सेवा करते हैं, वही उनका सच्चा श्राद्ध है। शरीर के छूट जाने पर हमारे द्वारा दी गई कोई भी वस्तु या भोग्य पदार्थ उन तक नहीं पहुंचता है। मरने के बाद प्राणी की गति उनके कर्मों के अनुसार होती है। जैसे उसके कर्म हैं, वैसी ही गति निश्चित है।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

संस्कार

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

शतपथ ब्राह्मण। समय प्रातः काल का है। जिस दिन बालक का यज्ञोपवीत करना हो उससे तीन दिन अथवा एक दिन पूर्व बालक को व्रत कराना चाहिये। फिर संस्कार विधि के अनुसार संस्कार करावे। आचार्य बालक को निम्न मंत्र से यज्ञोपवीत पहनावे-ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।1।।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

यज्ञोपवीत के अभाव में यज्ञ एवं वेदाध्ययन की आज्ञा नहीं है। संस्कार के अन्त में सभी उपस्थित स्त्री-पुरूष बालक को आशीर्वाद देवें, ओम् त्वं जीव शरदः शतं वर्द्धमानः आयुष्मान् तेजस्वी वर्चस्वी भूयाः। आशीर्वाद देकर सब अपने अपने घर को सिधारें।

(11) वेदारम्भ संस्कार-वेदारम्भ का अर्थ है गायत्री मंत्र से लेकर साङ्गोपाङ्ग चारों वेदों के अध्ययन के लिए नियम धारण करना। समय जो दिन उपनयन संस्कार का है वही दिन वेदारम्भ का है। यदि उस दिन नहीं हो सके तो दूसरे दिन अथवा एक वर्ष के भीतर किसी दिन करे। इस दिन आचार्य बालक को अर्थ सहित गायत्री मन्त्र कण्ठस्थ कराता है। उसे ब्रह्मचर्य के नियम बताता है तथा उनकी पालना करने को कहता है। संस्कार के अन्त में सभी उपस्थित जन बालक को आशीर्वाद देकर विदा होते हैं।

(12) समावर्त्तन संस्कार-समावर्त्तन संस्कार उसे कहते हैं जिसमें ब्रह्मचर्य व्रत, साङ्गोपाङ्ग, वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ विद्या को पूर्ण रीति से प्राप्त कर गृहस्थाश्रम ग्रहण करने के लिए विद्यालय छोड़ कर घर की ओर आना होता है। पारस्कर गृह्यसूत्र में कहा गया है-

वेदऽसमाप्य स्नायाद्। ब्रह्मचर्य वाष्ठाचत्वारिऽशकम्। त्रय एव स्नातका भवन्ति-विद्या स्नातको व्रतस्नातको ऽचेति।।

अर्थ-जब वेदों की समाप्ति हो तब समावर्त्तन संस्कार करे। सदा पुण्यात्मा पुरूषों के साथ सब व्यवहारों में साझा रखे। राजा, आचार्य, श्वसुर, काका और मामा आदि का अपूर्वागमन जब हो और स्नातक ब्रह्मचारी घर को आवे तब प्रथम पग धोने का जल, मुख प्रक्षालन के लिए जल और आचमन के लिए जल देकर शुभासन पर बैठा कर मधुपर्क देवे। आचार्य को सम्मान सहित गोदान देवे। यथा शक्ति वस्त्र, धनादि भी देकर सम्मान करे।

(13) विवाह संस्कार-विवाह उसे कहते हैं कि जो पूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत द्वारा विद्या बल को प्राप्त तथा सब प्रकार से शुभ गुर्ण-कर्म-स्वभाव में तुल्य परस्पर प्रीतिपूर्वक होकर सन्तानोत्पत्ति और अपने-अपने वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करने के लिए स्त्री और पुरूष का सम्बन्ध होता है। समय-उत्तरायण शुक्ल पक्ष अच्छे दिन अर्थात् जिस दिन प्रसन्नता हो उस दिन विवाह करना चाहिये। आश्वलायन गृह्यसूत्र का कहना है कि सब काल में विवाह किया जाना चाहिए। विवाह संस्कार विधि में लिखित विधि के अनुसार ही होना चाहिये।

(14) वानप्रस्थ संस्कार-ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेद् गृही भूत्वा वनी भवेद् वनी भूत्वा प्रवजेत्।। शतपथ ब्राह्मण।

मनुष्यों को चाहिये कि ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति करके गृहस्थ होवें। गृहस्थ होकर वानप्रस्थ होवें और वानप्रस्थ होकर सन्यास ग्रहण करें। जब गृहस्थ वानप्रस्थ होने की इच्छा करे तब अग्नि होत्र को सामग्री सहित लेकर ग्राम से निकल जंगल में जितेन्द्रिय होकर निवास करे। वनवासी गृहस्थों से भिक्षा लेकर निर्वाह करे तथा शास्त्रों का अध्ययन करे। संस्कार विधि के अनुसार विधिपूर्वक वानप्रस्थ ग्रहण करें।

(15) सन्यास संस्कार-सन्यास संस्कार उसे कहते है कि जिसमें मोहादि आवरण, पक्षपात छोड़ कर विरक्त होकर सम्पूर्ण पृथ्वी पर परोपकारार्थ विचरण करे। जिस दिन दृढ़ वैराग्य प्राप्त होवे उसी दिन चाहे वानप्रस्थ का 25 वर्ष का समय पूरा भी नहीं हुआ हो अथवा वानप्रस्थ का अनुष्ठान न करके गृहस्थाश्रम से ही सन्यास आश्रम ग्रहण कर ले। यदि पूर्ण अखण्डित ब्रह्मचर्य, सच्चा वैराग्य और पूर्ण ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त होकर विषयासक्ति की इच्छा आत्मा से उठ जावे, पक्षपात रहित होकर सबके उपकार करने की इच्छा होवे और जिसको दृढ़ निश्चय हो जावे कि मैं मरण पर्यन्त यथावत् सन्यास धर्म का निर्वाह कर सकूंगा तो वह न तो गृहास्थाश्रम करे न वानप्रस्थाश्रम किन्तु ब्रह्मचर्याश्रम को पूर्ण करके सन्यासाश्रम को ग्रहण कर ले। संस्कार विधि में दी गई विधि से सन्यास ग्रहण करना चाहिये।

(16) अन्त्येष्टि कर्म-अन्त्येष्टि कर्म उसे कहते हैं कि जो शरीर के अन्त का संस्कार है। इसके पश्चात् उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। जब कोई मर जावे तो यदि पुरूष है तो पुरूष और स्त्री है तो स्त्रियां उसे स्नान करावें। चन्दनादि सुगन्ध लेपन और नवीन वस्त्र धारण करावें। फिर मृतक को श्मशान में ले जावें। वहां उसे ठीक से जलाने के लिए पर्याप्त लकड़ियां, उचित मात्रा में घृत, केसर, कपूर, अगर-तगर का उपयोग करे। चिता पर रखते समय मृतक के पग दक्षिण, नैऋत्य अथवा आग्नेय कोण में रहें। शिर उत्तर, ईशान वा वायव्य कोण में रहें। शिर उत्तर, ईशान वा वायव्य कोण में रहे। मृतक के पग की ओर वेदी के तले में नीचा और शिर की ओर थोड़ा ऊंचा रहे। पश्चात् घृत का दीपक करके कपूर में लगा कर शिर से आरम्भ कर पाद पर्य्यन्त मध्य-मध्य में अग्नि प्रवेश करावे। अग्नि प्रवेश करा कर ओम् अग्नये स्वाहा। ओम् सोमाय स्वाहा। ओम् लोकाय स्वाहा। ओम् अनुमतये स्वाहा। ओम् स्वर्गाय लोकाय स्वाहा। इन पांच मंत्रों से घृत आहुतियां देकर अग्नि को प्रदीप्त करे। फिर चार मनुष्य पृथक्-पृथक् खड़े होकर वेदों के मंत्रों से आहुति देते जाएं। जब शरीर भस्म हो जावे तब सब जने वस्त्र प्रक्षालन स्नान करके जिसके घर में मृत्यु हुई हो उस घर का मार्जन, लेपन प्रक्षालनादि से शुद्धि करके देव यज्ञ करें जिससे मृतक का वायु घर से निकल जावे।

तीसरे दिन मृतक के सम्बन्धी श्मशान में जाकर चिता से अस्थि उठा कर उसे श्मशान भूमि में कहीं रख देवे और राख को इकट्ठी कर कहीं खेतों में डाल देवे।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट संस्कारों को वैदिक रीति के अनुसार करने की योग्यता रखता हो। मासिक दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। आवास की व्यवस्था आर्य समाज की ओर से निःशुल्क रहेगी।

सम्पर्क सूत्र-प्रधान आर्य समाज-90348-60417

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला जिला गुरदासपुर में एक सुयोग्य पुरोहित चाहिए जो वैदिक रीति के अनुसार हवन यज्ञ तथा सभी संस्कारों को करने में सक्षम हो। आवास की निशुल्क व्यवस्था आर्य समाज की ओर से रहेगी तथा मासिक दक्षिणा योग्यता के अनुसार दी जायेगी। इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र-प्रधान आर्य समाज-98881-67678

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

प्राणी जगत् में सर्वोत्तम मनुष्य

ले.-आचार्य देवेन्द्र प्रसाद शास्त्री ''सुवित्रेय'' आर्य समाज मंदिर स्वामी श्रद्धानंद पथ, रांची

(गतांक से आगे)

इसी प्रकार इस मानव देह में सप्तद्वीप समन्वित सुमेरू पर्वत नदियों के समूह तथा सागर क्षेत्र और क्षेत्रपाल हैं:इसमें सात लोक और सात पाताल तथा चौदह भुवन भी मौजूद हैं। मूलाधार में भूलोक, स्वाधिष्ठान में भुव: लोक, नाभि में स्वर्ग लोक, हृदय में महलोक कण्ठ में जनर्लोक, ललाट में तपलोक और ब्रह्मरन्ध्र में सत्यलोक प्रतिष्ठित हैं। कटि प्रदेश से उपरिस्थान में पृथक्-पृथक् ये सात लोक हैं। पाँवों से तल लोक, पाँव के ऊपर के भाग में तलातल और गुल्फ (एड़ी के ऊपर का भाग) के बीच में महातल, गुल्फ के ऊपर रसातल, दोनों जंघाओं के बीच में सुतल-जानु (घुटना) के मध्य वितल ऊरूओं के मध्य में पाताल लोक हैं:-

''देहेऽस्मिन वर्त्तते मेरू: सप्तद्वीप समन्वित:। सरित: सागरा: शैला: क्षेत्राणि क्षेत्र पालक:।

मूलाधारे तु भूलोक: स्वाधिष्ठाने भुवस्तत:। स्वर्लोको नाभिदेशे च हृदये तु महस्तला:।।

जनलोकं कंठ देशे च तपलोकं ललाटके। सत्यलोके महारन्ध्रे इति लोका: पृथक्-पृथक्।।

तलं पादांगुषृतले तस्योपरि तलातलम्। महातलं गुल्फमध्ये गुल्फोपरि रसातलं।।

सुतलं जङ्घयोर्मध्ये वितलं जानुमध्यमम्। ऊर्वोर्मध्ये तलम्प्रोक्तं सप्तपातालमीरितम्।।''

इस पिंड में सप्तद्वीप इस प्रकार हैं:-1. मज्जा (चर्बी) में जम्बूद्वीप, 2. अस्थि मध्य में शाकद्वीप, 3. नाड़ियों में शाल्मलि द्वीप, 4. मांस में कुशद्वीप, 5. त्वचा में क्रौंचद्वीप 6. शरीरस्थ लोम में गोमेदद्वीप और 7. नाखुनों में पुष्करद्वीप हैं। सप्त समुद्रों का उल्लेख इस प्रकार है:- 1. पसीने में क्षार समुद्र, 2. ललाट में श्रीरसागर, 3. वाणी में मधु समुद्र, 4. कफ में दधिसमुद्र, 5. मेद में घृत समुद्र, 6. रस में इक्षुरस समुद्र और 7. वीर्य में स्वादुजल समुद्र। शरीर के नवद्वारों में नौखण्ड बतलाये गये हैं। यथा 1. मुख में भरतखण्ड, 2. नाक में किन्नरखण्डि, नटहरिखंड 3. नेत्रों में केतुमाल और भद्राश्रव खण्ड, 4. कानों में हिरण्यमय खण्ड और रम्यखण्ड, 5. गुदा में कुरूखण्ड, 6 लिंग में इलावृत खण्ड। मेरूदण्डे में मेरूमंदर, ब्रह्मकपाट में कैलाश, पीठ में हिमालय, वाम स्कन्ध में मलयाचल, दायें स्कन्ध में मंदराचल, दक्षिण कान में विन्ध्याचल, वाम कान में मैनाक, ललाट में श्रीपर्वत, दूसरे पर्वत हाथ पैर की अंगुलियों के मूल में होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस मनुष्य शरीर में दो प्रकार के तत्व विद्यमान हैं। पहला आत्म-तत्व और दूसरा अनात्म तत्व। जब मानव शरीर में आत्म तत्व और अनात्म तत्वों के ऊपर विवेक दृष्टि जागृत होती है, तब विवेक चिन्तन करने से आत्म-ज्ञान की प्राप्ति होकर परमात्मा का बोध प्राप्त होता है। कर्मयोगी इसी मानव शरीर में परमात्मा का साक्षात्कार समाधिस्थ हो करते हैं। ऐसे तो परमात्मा कण-कण में व्याप्त हो रहा है, परन्तु कण-कण में जीवात्मा सर्वव्यापकत्व गुण से भिन्न है। इसलिये शरीर रूपी मन्दिर में ही योगीजन परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं।

भारतीय धर्म ग्रन्थों में मानव-जीवन के चार उद्देश्य बतलाए गये हैं: 1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम और 4. मोक्ष। धर्मार्थकाम मोक्ष की सफलता को प्राप्त करने में बुद्धि, शरीर, मन और आत्मा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है? क्यों? क्योंकि 'धर्म' का सम्बंध 'बुद्धि' से है तथा 'बुद्धि' का सम्बन्ध 'धर्म' से है। अर्थ का सम्बन्ध शरीर से और शरीर का 'अर्थ' से। 'मन' का सम्बन्ध 'काम' से एवं 'काम' का 'मन' से। तद्वत् 'आत्मा' का 'मोक्ष' से और 'मोक्ष' का 'आत्मा' से सम्बन्ध है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि बुद्धि को धर्म, शरीर को अर्थ, मन को काम और आत्मा को मोक्ष की जरूरत हुआ करती है। जो मनन, चिन्तन, सुतर्कादि करके काम करे वही व्यक्ति इन उद्देश्यों को पा सकेगा तथा उसे ही 'मानव' कहा जाता है:-''मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति इति मानव:।'' अत: बोध प्राप्ति के पथ पर मनन, चिन्तन आदि का विशेष महत्व है। सम्पूर्ण प्राणी-जगत् में मनुष्य को मनन क्षमता और तर्कशक्ति के आधार पर अलग कर दिया गया है। इसीलिये तो वेद भी कहता है 'मनुष्य बनो' ''मनुर्भव''। यही कारण रहा होगा, जिसके फलस्वरूप महाभारत में मानव देह की महत्ता पर विचार प्रस्फुटित हुआ-''मनुष्य देह से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं। यही जीवात्मा को सभी बंधनों से मुक्त करने का परमद्वार और परमात्मा का श्रेष्ठ मन्दिर है।'' इसीलिए तो सुकर्मीजन ''मनुष्य-शरीर'' पाने की कामना करते हैं। देवता भी इसे पाकर भारत में जन्म लेने के लिए ललचाते हैं। विष्णु-पुराण में कहा गया है:-

''गायन्ति देवा: किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

स्वर्गापवर्गस्य च रेतुभूते भवन्ति भूय: पुरूष: सुरत्वात्।।''

यह श्रेष्ठ मन्दिर जो आठ चक्रों, नौ दरवाजों का देवालय हैं, जिसे मैं विभिन्न नामों से पूर्व में वर्णित कर चुका हूँ। मानों यहाँ यह मानव शरीर स्वयं में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को समाये हुए विश्वात्मा के जीते-जागते स्वरूप में प्रतिष्ठित हो रहा है। उपरिलिखित तथ्यों के आधार पर हम पाते हैं कि सच्ची 'ब्रह्मपुरी' अन्तरिक्ष व द्युलोक में नहीं है, बल्कि यह परम पवित्र मन्दिर हर देश, हर नगर, हर ग्राम और हर घर में मौजूद है। कालक्रम की अज्ञानता से हम इस पवित्र मन को भुला बैठे हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम योग्य गुरू के निर्देशन में इस भगवान् के मन्दिर में पूजा करना सीखें। भगवान् के सच्चे-मन्दिर के ज्ञान को हासिल करें। इसे भूलने के कारण ही आधुनिक मानव बाह्य उलझनों में फँस रहा है। फलत: मानव समुदाय धर्मान्धिता में उलझ कर परस्पर ईर्ष्या, द्वेष घृणा और नफरत की प्रचंड अग्नि को धधका रहा है तथा स्वार्थपरता, रूढ़िवादिता एवं धर्मान्धता की कुण्ठा को चारों ओर फैला रहा है।

भारत का सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्व है:-''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का आदर्श चरितार्थ कर राष्ट्रीय एकता स्थापित रखना, संसार में व्याप्त हो रहे धर्मान्धता पर नियंत्रण रखना। हम सभी मानवधर्म के पुजारी और भारतीय संस्कृति के उत्तराधिकारी है। यदि विश्व में व्याप्त धर्मान्धता को रोकना चाहते हैं तो सर्वप्रथम परमात्मा के सच्चे मन्दिर का पुजारी बनें। इस तन से लोकोपकार और परोपकार करें तथा अपने उद्देश्यों को हासिल करें। अनगिनत पतितों ने प्रभु भक्ति अपना कर अपने जीवन को सँवार तथा सुधार लिया। सुधी पाठकजन इसे पढ़कर लाभ उठायें, तो मेरा यह लेख लिखना सार्थक हो जायेगा।

योग आसन-स्वास्थ्य साधन

पं.-वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

योग करो हे सीमित आभ, योगासन के बहुत हैं लाभ।
तन मन रखे निर्विकार, करें रोज सूर्य नमस्कार।
अन्तर्मन में हो अनुशासन, जब करते हम पद्मासन।
भोजन का अच्छा हो पाचन, करें नित्य हम वज्रासन।
करें फेफड़े अच्छा काम, रोज करेंगे जब प्राणायाम।
ओज से मस्तक दमकाती, बड़े काम की है कपालभाति।
स्नायुओं में बनी रहे तरी, जब हो गुंजित भ्रामरी।
मन में हर पलजपें ओम्, कर रहे हों जब अनुलोम विलोम।
लम्बाई का मिलता धन, नित्य करें जो ताड़ासन।
रीढ़ में आए लचीलापन, कर लो भाई हल आसन।
सर्व अंग पुष्टि का साधन, होता है सर्वांग आसन।
उदर अंगों का हो नियमन, जब हम करें मयूरासन।
स्मरण शक्ति होती विलक्षण, जो नित करता शीर्षासन।
चौड़ी छाती का साधन, रोज लगाओ दण्डासन।
मन का होता शुद्धिकरण, जब लगता है सिद्धासन।
हो थकान का पूर्ण शमन, अन्त में कर लो शव आसन।
सदा रखना इसको याद, यम नियम बिन बने न बात।
करें योग का नित्य प्रयोग, दूर रहेंगे सारे रोग।
आधि व्याधि से न होंगे त्रस्त, तन मन पूर्ण होगा स्वस्थ।।

"कुछ मुख्य-मुख्य क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय"

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज़ १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

प्रत्येक देश हितैषी भारतीय का यह पावन कर्त्तव्य है कि वह अपने देश में हुए क्रान्तिकारी जिनके बलिदानों से हमें आजादी मिली है, उनके जीवन के सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत जानकारी जरूर रखनी चाहिए। हम अपने दादा-परदादा की जानकारी इसलिए रखते हैं, जिससे हमें अपने परिवार के गौरव और प्रतिष्ठा का अनुभव होता है और परम्पराओं की जानकारी होती है। इससे एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है। इसी प्रकार हमारे देश का गौरव बढ़ाने वाले क्रान्तिकारियों को भी हमें स्मरण रखना चाहिए और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने मन में भी देश भक्ति की अग्नि को प्रज्ज्वलित करना चाहिए, और अपने देश की उन्नति व समृद्धि में हम क्या सहयोग दे सकते हैं, इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए। हम ऐसा कोई काम नहीं करें जिससे देश को हानि पहुँचे और ऐसे काम करे जिससे देश उन्नति और समृद्धि की ओर अग्रसर होता रहे। मेरी यही सद् इच्छा है कि क्रान्तिकारियों के जीवन सम्बन्धी जानकारी हर व्यक्ति रखे। हमारे देशवासियों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए पहला प्रयास सन् 1857 में किया गया था। वह प्रयास असफल हो जाने के बाद, अंग्रेजों ने इतना कड़ा शिकंजा कस दिया था और देशवासियों को इतनी अधिक पीड़ा देने लगे थे जिससे वे सिर ऊँचा भी नहीं कर सके। चालीस वर्षों तक ऐसी ही घुटन बनी रही। सन् 1897 में चापेकर परिवार के तीन बन्धुओं ने अपना बलिदान देकर, यह चुप्पी तोड़ी।

१. चापेकर के तीन बन्धु-सन् 1897 में पूना में प्लेग फैलने के बहाने मकान खाली करवाने के लिए मिस्टर रैण्ड ने भारतीयों पर भारी अत्याचार किये और उनके मान-सम्मान को भी आघात पहुँचाया। तब चापेकर परिवार के दो सगे भाई जिनके नाम थे दामोदर चापेकर व बाल कृष्णा चापेकर ने मिस्टर रैण्ड की हत्या करके इसका बदला लिया। और तीसरे भाई वासुदेव चापेकर ने उन मुखबिरों को गोली से उड़ाया। जिन्होंने विश्वासघात करके चापेकर बन्धुओं को फाँसी दिलायी थी। इस प्रकार आजादी के लिए तीन सगे भाई फाँसी पर खुशी-खुशी झूल गये।

२. श्याम जी कृष्ण वर्मा-श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्तूबर 1857 को करसन जी भसांली के यहाँ गुजरात राज्य के कच्छ प्रदेश में माण्डवी नगर के समीप विलायत गाँव में हुआ था। इनके माता-पिता का निधन इनकी बहुत छोटी अवस्था में ही हो गया था। वर्मा जी, बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि तथा अत्यधिक मेधावी थे। मगर निर्धन परिवार से सम्बन्ध होने के कारण इन्होंने धनाढ़्य लोगों के यहाँ काम करके अपना जीवन निर्वाह करना पड़ा। उन्हीं के सहयोग से ही वर्मा जी अपने परिश्रम के कारण अध्ययन करते रहे। इन्होंने सन् 1874 में महर्षि दयानन्द जी का मुम्बई में आचार्य कमलनयन से शास्त्रार्थ सुना था और भी स्वामी जी के कई व्याख्यान सुने जिनसे वर्मा जी महर्षि दयानन्द जी से बहुत अधिक प्रभावित हो गये और स्वामी जी ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना 1875 में की तब सर्व प्रथम अध्यक्ष इनको बनाया और फिर स्वामी जी ने श्री विनियर विलियम के निवेदन पर वर्मा जी को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का संस्कृत प्राध्यापक बना कर इंग्लैण्ड भेज दिया। वहाँ वर्मा जी ने अपनी विद्वता से अपनी धाक जमा ली और अध्यापन के साथ साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और एम-ए करने के साथ-साथ बैरिस्टर भी बन गये। स्वामी जी वर्मा जी को अध्यापन के साथ-साथ बाहर रह कर भारत को स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयास करने को भी कहा था। इसलिए वर्मा जी ने 1905 में 25 कमरों का एक मकान खरीद कर उसका "इण्डिया हाऊस" नाम रखकर उसको क्रान्तिकारियों का आश्रय स्थल बना दिया जिसमें वीर सावरकर भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम. ए, मैडम कामा, विपिन चन्द्र पाल आदि आते-जाते रहते थे। यही पर रह कर मदन लाल ढींगड़ा ने सर विलियम कर्जन वायली जो भारतीय युवकों को स्वधर्म और स्वदेश प्रेम से विमुख करता था, उसको गोली मार कर मृत्यु कर दी थी। वर्मा जी ने एक घोषणा की थी कि जो छात्र अंग्रेजों की नौकरी न करने की तथा तन, मन, धन से देश की सेवा का व्रत लेंगे, ऐसे युवकों को प्रति वर्ष दो हजार रूपये छात्रवृति के रूप में दिये जाएंगे। इस घोषणा के अनुसार बाल गंगाधर तिलक ने वीर सावरकर को इंग्लैण्ड इण्डिया हाऊस में भेजा और सावरकर ने क्रान्तिकारियों को इतना अधिक प्रोत्साहित किया जिससे "इण्डिया हाऊस" क्रान्तिकारियों का केन्द्र बन गया। जब वर्मा जी पर अंग्रेज गुप्तचरों की कड़ी नज़र रहने लगी तो वे इण्डिया हाऊस की पूरी जिम्मेवारी सावरकर पर लगाकर स्वयं 1907 में इंगलैंड छोड़कर पेरिस (फ्रांस) चले गये। वहाँ पर भी श्रीमती भीका कामा के साथ क्रान्तिकारी प्रक्रिया करते रहे, फिर सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया। तब वे पेरिस से स्विटजरलेण्ड होते हुए जेनेवा चले गये और 31 मई 1930 में 73 वर्ष की आयु में उस वीर पुरूष, क्रान्तिकारियों के गुरू श्याम कृष्ण वर्मा का निधन हो गया।

3. लाला लाजपत राय:-पंजाब केसरी लाला लाजपतराय एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक ओजस्वी वक्ता, समाज सेवी, सिद्ध हस्त लेखक, कुशल सम्पादक, कट्टर राष्ट्रवादी, राजनीतिज्ञ, भावुक हृदय, शिक्षा शास्त्री एवं निर्भीक क्रान्तिकारी थे। लाला जी का पैतृक गाँव लुधियाना जिले में जगरांव था, मगर उनका जन्म उनके ननिहाल गाँव ढुढ़िके जिला फरीदकोट (पंजाब) में 28 जनवरी 1863 को हुआ। इनके पिता का नाम राधा कृष्ण तथा माता का नाम गुलाबी देवी था। लाजपतराय जी की शिक्षा पाँचवें वर्ष में आरम्भ हुई। सन् 1880 में इन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से ऐण्ट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आ गये। यहाँ पर उन्होंने गवर्नमेन्ट कॉलेज में प्रवेश किया तथा 1882 में एफ-ए और मुख्ताठी (कानून) की परीक्षा एक साथ कर ली। यहाँ पर हंसराज तथा पं. गुरूदत्त जी उनके सहपाठी थे तथा उन्हीं के माध्यम से उनका सम्पर्क आर्यसमाज से हुआ। वे आर्य समाज व महर्षि दयानन्द से इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे कहते थे कि आर्य समाज मेरी धर्म की माँ है तथा महर्षि दयानन्द मेरे धर्म के गुरू हैं। 30 अक्तूबर 1883 में महर्षि दयानन्द जी का देहावसान हो गया तथा 9 नवम्बर 1883 को लाहौर में आर्य समाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया। इस सभा में निर्णय हुआ कि महर्षि जी की स्मृति में एक महाविद्यालय की स्थापना की जाये। इसी क्रम में कांलान्तर में डी. ए. वी. की स्थापना हुई जिसमें लाला जी की विशेष भूमिका रही।

इसके बाद सन् 1885 में लाला जी वकालत करने के लिए रोहतक आ गये। यहाँ रहते हुए उन्होंने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और उसके बाद 1886 में वे हिसार आकर वकालत करने लगे। साथ ही आर्य समाज तथा काँग्रेस के माध्यम से समाज सेवा भी करने लगे। सन् 1905 में जब बनारस में कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो स्वाभिमानी लाला जी ने इसका डटकर विरोध किया। मानो यही से काँग्रेस में गर्म व नरम दो दलों की नींव पड़ गई। काँग्रेस में इस विचार धारा के आदमी काफी हो गये कि स्वतन्त्रता केवल गिड़गिड़ाने से नहीं मिलेगी, इसके लिए कुछ कुर्बानियाँ देनी होगी। इस विचारधारा के विशेष लाला जी, बाल गंगाधर तिलक व सुरेन्द्र नाथ पाल थे इसलिए लाल, बाल, पाल के रूप में गर्म दल काफी तेजी के साथ उभरा। सन् 1907 में पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ एक शिष्य मण्डल के सदस्य के रूप में लाला जी इंग्लैण्ड गये, वहाँ से अमरीका चले गये। कुछ दिनों बाद फिर स्वदेश लौट आये।

सन् 1907 में किसानों का आन्दोलन भी काफी तेजी से उभरा, उसमें भी लाला जी व क्रान्तिकारी वीर भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह ने विशेष भाग लिया। जिससे उनको देश निष्कासित करके बर्मा माण्डले जेल में भेज दिया। वहाँ लाला जी लगभग छः महीने रहे। इस अवधि में उन्होंने आर्य समाज व महर्षि दयानन्द आदि काफी पुस्तकें लिखी। फिर जनता के प्रबल विरोध से उन दोनों को छोड़ना पड़ा। तभी से क्रान्तिकारी गतिविधियाँ सक्रिय हो गई। सन् 1921 में गान्धी जी द्वारा चलाए गये असहयोग आन्दोलन में लाला जी ने सक्रिय भूमिका निभाई। सरकारी शिक्षण संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार किया गया। शराब के विरूद्ध आन्दोलन किया गया। इन्हीं दिनों कलकत्ता में काँग्रेस का एक विशेष अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता लाला जी ने की। इन समस्त गतिविधियों में लाला जी की सक्रियता को देखते हुए सरकार ने उन्हें पुनः बन्दी बना लिया। जिससे इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया तथा अठारह महीनों बाद ही इन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

(क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-वेदों में नारी

करती थीं। पितरों (पूर्वजों) के समान ही वेद में शोभन प्रवचन करने वाली, सत्य के द्वारा बढ़ने वाली या प्रसिद्ध दो ऐसी देवियों का उल्लेख है जिनके पुत्र देव हैं अर्थात् विद्वान हैं। यहाँ ये दो देवियां द्यावापृथिवी के समान तेजस्वी और यश से विस्तृत उपदेशिका और अध्यापिका हो सकती हैं।

विधवा द्वारा नियोग प्रथा से सन्तान प्राप्त करने का अधिकार था या नहीं, इस विषय में स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं होते हैं। महर्षि दयानन्द के नियोग के पक्ष में दिये गये विचारों के अनुसार विधवा को तत्कालीन हिन्दू समाज में पुनर्विवाह का अधिकार दिलाने का उपक्रम था क्योंकि समाज सीधा पुनर्विवाह के लिए तैयार न था। स्वयं आर्यसमाज के अनुयायियों ने नियोग की अपेक्षा विधवा-पुनर्विवाह को अधिक अपनाया। नियोग का अवशेष आज भी कई परिवारों में पति की मृत्यु के पश्चात् अविवाहित देवर के साथ उसकी पत्नी के विवाह के रूप में देखा जा सकता है।

वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से स्त्री की स्थिति अत्यन्त उन्नत थी। वेद उसके किसी भी धार्मिक कृत्य में सम्मिलित होने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाते। वह सामाजिक अथवा धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अथवा केवल मनोविनोद के लिए आयोजित सभा, विदथ और समनों में भाग ले सकती है। वह पति के साथ गृह की स्वामिनी है। वह घर के बड़े-बूढ़े, युवा और किशोर, स्त्री-पुरुषों पर शासन करे-ऐसी भावना व्यक्त की गई है। एक स्थान पर स्त्री को स्वतन्त्र विचारों वाली बताने के लिये कहा गया है कि स्त्री का मन शासित नहीं किया जा सकता और उसकी बुद्धि तीव्र होती।

एक अन्य स्थल पर पुरुरवस् के उर्वशी के वियोग में प्राणत्याग कर देने के प्रस्ताव पर उसकी मूर्खता का उद्घाटन करते हुए स्त्रियों की निन्दा इन शब्दों में की गई है:-

''स्त्रियों की मित्रता स्थिर नहीं होती, इनके हृदय सालावृकों के होते हैं।''

यदि इस प्रसंग को ऐतिहासिक मानें तो ध्यान देने योग्य बात है कि यह वचन स्वयं एक स्त्री अर्थात् उर्वशी द्वारा कहा गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पुरूरवा को आत्म-हत्या से विमुख करने के लिए भी उर्वशी द्वारा की गई स्त्रियों की यह निन्दा सहायक हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस सम्पूर्ण सूक्त में यास्क से लेकर परवर्ती अनेक विद्वानों द्वारा लाक्षणिक अभिप्राय बताये गये हैं। उस दृष्टि से देखने पर पुरूरवा और उर्वशी भौतिक पुरुष और स्त्री न होकर आकाशीय या आध्यात्मिक तत्व होंगे और प्रस्तुत मन्त्रांश को उसी परिप्रेक्ष्य में देखना होगा।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेदोक्त नारी सशक्त, सक्षम और सुशिक्षित है और उसे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों क्षेत्रों में समान अधिकार प्राप्त है।

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः।।

-पू० ४.१.५.२

भावार्थ-आप प्रभु सबके रक्षक और पालक हैं आपकी भक्ति बड़ी सुगमता से हो सकती है वेदों में आपकी भक्ति, उपासना करने के लिए बहुत ही उपदेश किए गये हैं। जो भाग्यशाली आपकी भक्तिप्रेमपूर्वक करते हैं, उनकी प्रार्थना पुकार को अति शीघ्र सुन कर उनकी सब कामनाओं को आप पूर्ण करते हैं।

गायन्तित्वा गायत्रिणो अर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो उद्वंशमिव येमिरे।।

-पू० ४.२.१.१

भावार्थ-हे प्रभो! जैसे आपके सच्चे पूजक, वेद विद्या को पढ़ कर अच्छे गुणों के साथ अपने और औरों के वंश को भी पुरुषार्थी करते हैं, वैसे अपने आपको भी श्रेष्ठ गुणयुक्त और पुरुषार्थी बनाते हैं। जो पुरुष आप से भिन्न पदार्थ की पूजा वा उपासना करते हैं, उन को उत्तम फल कभी प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि आपकी ऐसी कोई आज्ञा नहीं है कि, आपके समान कोई दूसरा पदार्थ पूजन किया जाए, इसलिए हम सब को आपकी ही पूजा करनी चाहिये।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य गर्ल्ज सी.सै. ...

प्रिंसीपल श्रीमती श्रीमती रीटा बांसल जी ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ते हुये स्कूल के इतिहास के बारे में बताया। स्कूल के मैनेजर श्री निहाल चन्द जी ने शिक्षक दिवस की सभी अध्यापकों को अपनी शुभकामनाएं दी। उन्होंने डा. राधाकृष्णन सर्वपल्ली जी के जीवन के बारे में बताया।

मुख्य अतिथि स. मनप्रीत सिंह बादल ने सभी अध्यापिकाओं को अपनी शुभकामनाएं दी। उन्होंने बच्चों, बच्चों के माता पिता व अध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरु का दर्जा बहुत बड़ा होता है इसलिये सभी बच्चों को अपने अध्यापकों का सम्मान करना चाहिये और प्रेरणामयी ढंग से बच्चों को अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान देने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि डाक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक आदि सभी को बनाने में अध्यापकों का योगदान है और डा. भीमराव अम्बेदकर की उदाहरण देते हुये बताया कि अम्बेदकर उनके अध्यापक का नाम था। इस अवसर पर उन्होंने स्कूल के विकास के लिये स्कूल को दस लाख रुपये की ग्रांट देने का ऐलान किया। स्कूल प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी को स्कूल के प्रति निष्ठा, उन्नति व अपना हर साल शत प्रतिशत परिणाम देने के लिये पुरस्कृत किया गया। बोर्ड की परीक्षा में शत प्रतिशत परिणाम देने वाले अध्यापिका श्रीमती रीटा जिन्दल, मोना बेदी, पूजा, हरदीप कौर को इनाम देकर सम्मानित किया गया। स्कूल के वेस्ट टीचर का अवार्ड श्रीमती सरोज बांसल और नवनीत मैडम को देकर सम्मानित किया गया। शैक्षणिक सत्र में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाली छात्राओं को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह दिए गये। मंच का संचालन श्रीमती चन्द्रकांता मैडम ने किया। इस अवसर पर श्री अरुण वधावन, श्री पवन मानी जी, श्री मोहन झुबा जी, श्री केवल कृष्ण अग्रवाल, श्री अशोक कुमार जी भी पधारे हुये थे। स्कूल के उप प्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी ने आए हुये सभी मेहमानों का तहेदिल से धन्यवाद किया। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय गान गाया गया। इस मौके पर डिप्टी डी ईओ श्री इकबाल सिंह जी, डी एस एस स. गुरचरण सिंह जी और स. सुखदीप सिंह जी भी पधारे हुये थे।

-प्रिंसीपल सुषमा मेहता

पृष्ठ 8 का शेष-हिन्दी बोलते और लिखते...

इसके बाद हट जाएगी। दूसरे 25 साल तक हिन्दी के साथ अंग्रेजी चलेगी और तीसरे 27 सालों तक हिन्दी के साथ अंग्रेजी भी चलेगी। प्रिंसीपल तरनप्रीत कौर वालिया ने बताया कि हिन्दी भाषा संस्कृत भाषा की गंगोत्री से निकली भाषा है। हमारी संवेदनाओं, हमारे विचारों को व्यक्त करने का मार्ग है। हमारे सुख दुख की भाषा हिन्दी है। बी.ए. की छात्रा प्रभदीप कौर ने मधुवन खुश्बू देता है भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच संचालन डा. अरुणा पाठक ने किया। इस मौके पर श्री ललित शर्मा जी, श्री अक्षय तेजपाल, श्री वीरेन्द्र सरीन जी, डा. अरुण शुक्ला, डा. गौरी, निवेदिता, हरदीप कौर, वीनू, सुनील राणा, डा. कृष्ण गोयल, ओंकार सिंह आदि मौजूद रहे।

अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्णवर्चत।।

-पू० ४.२.३.३

भावार्थ-कृपासिन्धो भगवन्! आप कितने अपार प्यार और कृपा से हमें बारम्बरा उपदेश अमृत से तृप्त करते हैं कि हे पुत्रो! तुम पञ्चमहायज्ञादि उत्तम कर्मों से प्यार करो, मैं जो तुम्हारा सदा का सच्चा पिता हूँ, उसका सच्चे मन से पूजन करो। मैं समर्थ हूँ तुम्हारी सब कामनाओं को पूरा करूँगा। इस मेरे सत्य वचन में दृढ़ विश्वास करो, कभी सन्देह न करो।

हिन्दी बोलते और लिखते समय गर्व महसूस करें: प्रेम भारद्वाज

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर में आर्य समाज नवांशहर द्वारा हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं चित्र दो में उपस्थित जनसमूह।

बी.एल.एम. गर्ल्ज कालेज नवांशहर में आर्य समाज नवांशहर द्वारा हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार पर बल दिया गया। कार्यक्रम में बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, आर.के. आर्य कालेज और डी.ए.एन. कालेज के विद्यार्थी एवं स्टाफ सदस्य शामिल हुए। कार्यक्रम में पत्रिका स्वस्ति और समाचार बुलेटिन सोपुरण का विमोचन किया गया। प्रवक्ताओं ने कहा कि हिन्दी बोलते व लिखते हुये गर्व महसूस करें। कार्यक्रम की शुरूआत में ज्योति प्रज्वलन की रस्म मुख्य मेहमान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, कमलेश गुप्ता उद्घोषिक आकाशवाणी जालन्धर, मुख्य वक्ता श्री विनोद कुमार एसोसिएशन प्रो. लवली विश्वविद्यालय जालन्धर हिन्दी विभाग, डा. नीरज शर्मा कन्या महाविद्यालय जालन्धर संस्कृत विभाग एसोसिएट प्रोफैसर, श्री विनोद भारद्वाज जी, जिया लाल शर्मा, डा. मीनाक्षी शर्मा सचिव डी.ए.एन. कालेज ने संयुक्त रूप से की। उनके साथ कालेज की प्रिंसीपल तरनप्रीत कौर वालिया, डा. संजीव डाबर, डा. गुरविन्द्र कौर, डा. करुणा, डा. विकास, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, ललित शर्मा मौजूद रहे।

मुख्य मेहमान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि हिन्दी बोलते एवं लिखते हुये हमें गर्व महसूस करना चाहिये। उन्होंने कहा कि आर्य समाज हिन्दी के लिये समर्पित है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने हिन्दी भाषा का बहुत प्रचार प्रसार किया। उन्होंने कहा कि हम आज संकल्प करें कि अपने सभी कार्यों में हिन्दी को प्राथमिकता देंगे। स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने बड़े भारी मन से यह कहा था कि कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न तो उन्नति कर सकता है, न ही राष्ट्रभावना की अभिव्यक्ति कर सकता है। इसलिए हम राष्ट्र की उन्नति और अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को अपनाएं। केवल हिन्दी दिवस मना लेने से हम कर्त्तव्य को पूर्ण नहीं कर सकते। जब से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है तभी से हम हिन्दी दिवस मनाते चले आ रहे हैं परन्तु क्या हिन्दी को वह सम्मान और स्थान प्राप्त है जो उसे राष्ट्रभाषा के रूप में मिलना चाहिए था। अगर हमें वास्तव में अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रेम है तो हमें उसके उत्थान के लिए रचनात्मक और ठोस कार्य करना होगा जिससे हम हिन्दी को उसका गौरव प्रदान कर सके। कार्यक्रम में एम.ए. हिन्दी की छात्रा योगिता कालिया को विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त करने के लिये सम्मानित किया गया। कालेज की प्रबन्ध समिति के सैक्रेटरी विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि हमें अपनी हिन्दी भाषा पर गर्व करना चाहिये। हमें हिन्दी के कवि, लेखकों से प्रेरणा लेनी चाहिये। इसके बाद कमलेश गुप्ता जी ने कहा कि हमें महर्षि दयानन्द जी को प्रणाम करना चाहिये जिन्होंने अपना सारा जीवन हिन्दी को बढ़ाने में ही लगा दिया। डा. विनोद कुमार ने बताया कि हमें अपनी मातृभूमि एवं मातृभाषा से प्रेम करना चाहिये। संविधान में हिन्दी को तीन भागों में बांटा गया है। 15 साल तक हिन्दी के साथ अंग्रेजी चलेगी,

(शेष पृष्ठ सात पर)

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा में शिक्षक दिवस एवं पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा में शिक्षक दिवस एवं पारितोषिक वितरण समारोह के अवसर पर वित्त एवं योजना मंत्री श्री मनप्रीत सिंह बादल के पधारने पर उनका स्वागत करते हुये प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री अनिल कुमार अग्रवाल, उप प्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग, प्रबन्धक श्री निहाल चंद जी एडवोकेट, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता एवं अन्य। जबकि चित्र दो में बच्चे प्रस्तुति देते हुये।

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा के प्रांगण में दिनांक 8 सितम्बर 2019 दिन रविवार को शिक्षक दिवस व पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वित्त व योजना मंत्री स. मनप्रीत सिंह बादल जी रहे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री दविन्द्र बांसल जी रहे। दीप प्रज्वलन एवं गायत्री महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल जी ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और आए हुये सभी मेहमानों का स्वागत किया। स्कूल प्रबन्ध समिति के सदस्य, प्रिंसीपल एवं अध्यापकों ने मुख्य अतिथि स. मनजीत सिंह बादल, विशिष्ट अतिथि श्री दविन्द्र बांसल जी का सम्मान शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर किया। इस अवसर पर बच्चों ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। छोटी छोटी छात्राओं ने नशा छोड़ो और जल बचाओ पर बहुत ही सुन्दर स्किट प्रस्तुत की। फौजी जवानों के विचारों को व्यक्त करता तेरी मिट्टी में मिल जाउं ने सभी को भाव विभोर कर दिया। नन्हें मुन्ने बच्चों की मासूमियत से भरा नृत्य एक बटा दो, दो बटे चार ने सब का मनमोह लिया। पंजाब के दिल की धड़कन गिद्दा की पेशकारी भी दमदार रही। स्कूल की वाइस (शेष पृष्ठ सात पर)

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org